रविवार, दिनाँक **23-06-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

जब अंश हूँ मैं प्रभु तेरा, तो फ़रक कहाँ है तेरा मेरा।

हम एक हैं हम एक हैं, हम एकता के प्रतीक हैं।।

तूं सर्व में है तो क्या हुआ, मैं शरीर में हूँ तो क्या हुआ।

मैं तेरी सत्ता का ही रूप हूँ, तूँ अनूप है मैं अनूप हूँ।।

जब अंश हूँ मैं प्रभु तेरा, तो फ़रक कहाँ है तेरा मेरा।।

न जन्म में हूँ न मरण में हूँ, हुआ नाश मेरा कभी नहीं।

मैं तेरी तरह ही तो अजर हूँ, मैं तेरी तरह ही तो अमर हूँ।।

जब अंश हूँ मैं प्रभु तेरा, तो फ़रक कहाँ है तेरा मेरा।।

जो भी देखता है इस तरफ़, उसे नज़र आ जाते हो तुम।

वहाँ मैं अलग होता नहीं, होते तो हो इक तुम ही तुम।।

जब अँश हूँ मैं प्रभु तेरा, तो फरक कहाँ है तेरा मेरा।।

अंश आद में ही बना रहे, अंश आद से ही सजा रहे ।

यही सत्य हो, यही सत्य है, यही सत्य हो, यही सत्य है।।

जब अंश हूँ मैं प्रभु तेरा, तो फ़रक कहाँ है तेरा मेरा।।

जब अंश हूँ मैं प्रभु तेरा, तो फ़रक कहाँ है तेरा मेरा।

हम एक हैं हम एक हैं, हम एकता के प्रतीक हैं।।

जब अंश हूँ मैं प्रभु तेरा, तो फ़रक कहाँ है तेरा मेरा।।

सजनों सत्संग के दौरान जो भी गाते हो या सुनते हो उसके अर्थ को भली-भान्ति समझकर अपने हृदय में धारण करने का प्रयास भी किया करो। जानो जब अर्थ हृदयगत हो जाता है तो जो सद्-विचार गायन और श्रवण द्वारा हम खुद सुनते हैं व औरों को सुनाते हैं, उन्हें धारण करने की प्रबल इच्छा हमारे मन में स्वयंमेव उत्पन्न हो जाती है। परन्तु इस हेतु शर्त यह होती है कि भजन/कीर्तन को सुनने-सुनाने व धारण करने की क्रिया हम कुदरत के नियम अनुसार एकाग्रचित्तता से करें। ज्ञात हो कि जो इस नियमानुसार चलता है वह सुमतिवान ईश्वर का सुपुत्र कहलाता है। इसके विपरीत जो भी सजन सत्संग में अफुरता से नहीं बैठता वह कुपुत्र कहलाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि वह सजन सत्संग से जो भी प्राप्त हो रहा होता है उसे आत्मसात् कर क्रियान्वंत करने में सफल नहीं हो पाता। इस तरह वह सत्संग का पूरा लाभ नहीं उठा पाता और उसकी अज्ञानमय अवस्था, ज्ञानमय अवस्था में परिवर्तित नहीं हो पाती। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते यह नालायकी सजनों आपने कदापि नहीं करनी। कहने का आशय यह है कि आपने-हमने लायक बनना है क्योंकि हमने अपने आप की पहचान करनी है। इस संदर्भ में अभी हमने गाया है कि 'जब अंश हूँ मैं प्रभु तेरा, तो फ़रक कहाँ है तेरा मेरा'। सजनों मानो यही सृष्टि का तथ्य है और यही आत्मा परमात्मा की सर्व-व्यापकता का द्योतक सत्य है। जो इस सत्य को स्वीकार लेता है और तद्नुरूप अपने भाव स्वभाव ढाल लेता है, वह सुमतिवान अपने जीवन का यथार्थ प्रयोजन यानि 'मोक्ष' सिद्ध करने में सफल हो जाता है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों अभी जो आपने गाया है - लगता है कि आप उस सत्य से परिचित होते हुए भी, उसके आशय को नहीं पकड़ पाये। जानो यह कीर्तन हमें समझा रहा है कि हम सब एक रूप हैं यानि हम में, आप में कोई फ़र्क नहीं। सजनों जब इस सत्य की समझ आ जाती है तो इन्सान निश्चित रूप से 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर दृढ़ता से खड़ा हो स्थिर हो जाता है। यह स्थिति हमें अंतर्निहित ईश्वरीय शक्तियों से परिचित कराती है और हम समझ जाते हैं कि हम अत्यंत शक्तिशाली हैं। अब यह सुनने-समझने के पश्चात सजनों हमारे अन्दर प्रबल इच्छा पैदा होनी चाहिये कि हम अभी से 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर स्थिर हो जायें और जीवन की हर परिस्थिति में सन्तुष्ट रहते हुए, ईश्वरीय गुणों को धारण करें। इस तरह हमारा स्वाभाविक स्वरूप वास्तविकता का प्रतीक बन जाये और हम जगत में विचरते हुए यथार्थतापूर्ण सब कुछ करने के काबिल हो जायें। सजनों अपने पर कृपा करके जाग्रत अवस्था में आ जाओ।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि इन्सान की तीन अवस्थाएँ होती हैं - पहली जागृत अवस्था, दूसरी मृत-अवस्था व तीसरी आत्मविस्मृत अवस्था। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों अपनी जाँचना करो कि आप की गणना किस प्रकार के इन्सान रूप में आती है? इस विषय में मानो कि अगर तो माया के चक्कर में फँसकर आप मदहोश हुए पड़े हो, तो आप बेहोश हो। तभी तो आप किसी के साथ क्या कर रहे हो, आपको पता ही नहीं लगता यानि अपनी आदतों से मजबूर होकर, अपने स्वभाव द्वारा आप किसी को कितना हताहत कर रहे हो, उसका कितना नुकसान कर रहे हो, इसका आपको आभास ही नहीं होता। इस तरह नकारात्मक क्रियाएँ करना आपके चलन में आ गया है। परिणामतया सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ या अन्य वेद-शास्त्रों के वचन यानि कुदरत की वाणी जब आप तक पहुँचाने का प्रयास होता है, वह आप सुनते तो अवश्य हो पर उसे समझने में असमर्थ रहते हो और उसे समझने की कोशिश ही नहीं करते। मानो सजनों यह बहरापन नकारापन होता है और यही बहरापन आपको अविद्याग्रस्त यानि ज्ञानहीन इन्सान बनाये हुए है। जब आपके पास सही ज्ञान ही नहीं है और सही ज्ञान धारण करने के प्रति आपके मन मे इच्छा ही नही है तो आपके द्वारा की गई कोई भी क्रिया सार्थक कैसे हो सकती है? इस तरह तो जो भी क्रिया आप करते हो वह निरर्थक और कष्टदायक ही साबित होती है यानि दूसरों को भी कष्ट देती है और आप स्वयं भी उसका कष्ट भोगते हो। यह बहुत ही गम्भीर मानसिक स्थिति है। जिसके अंतर्गत जन्म का ऐसा असाध्य रोग लग जाता है जिसका निवारण किसी प्रकार से भी नहीं हो सकता। मानो ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आप अपनी निज शक्तियों से अपरिचित हो, इसी कारण आप शक्तिहीन हो। अब शक्तिहीन को तो कोई भी अपने अधीन कर लेता है। इस संदर्भ में सजनों कहाँ तो हमने यथार्थतापूर्ण जीवन जीने के योग्य बन, आत्मिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के हुक्म पर चलना था और कहाँ हम महामूर्खों के अधीन हो गये। सजनों ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि जन्मोपरान्त हमारी पालना में लापरवाही हुई और यही लापरवाही हमारे लिये घातक सिद्ध हुई। अब जो हुआ सो हुआ उसे भूल जाओ और उस रोग से छुटकारा पाने के लिये सत्य से परिचित होकर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के संग हो लो। जानो उन्हीं के पास इस भारी रोग के उपचार की औषधि है। इसके अतिरिक्त कोई मार्ग है ही नहीं। इस विषय में सजनों जब हमें यह अनुभूति है कि आत्म-स्मृति में आने के लिये अन्य कोई भी मार्ग नहीं है तो विलम्ब पर विलम्ब क्यों करते जा रहे हो? सजनों जानो कि कई सजन बाल अवस्था से ही इस द्वारे से जुड़े हुए हैं और अब वृद्ध अवस्था तक पहुँच चुके हैं परन्तु अभी तक भी अपनी यथार्थता से परिचित होने में कमजोर हैं। अब तक तो उन्हें मान लेना चाहिये था कि 'ईश्वर

है अपना आप', लेकिन वह ऐसा नहीं कर पाये। इसी कारण वह अपने बच्चों को भी सत्य धर्म के मार्ग पर प्रशस्त करने में असफल रहे।

सजनों अब आपका यह कार्य हमने अगले सप्ताह यानि अगले इतवार को करना निश्चित किया है। उस दिन सुबह सत्संग के समय आपके बच्चों ने यहाँ पहुँच जाना है। हर सजन के युवा बच्चों ने यहाँ उपस्थित होना है। उन बच्चों को हम उनकी वास्तविक शक्तियों और वास्तविक इलाही अस्तित्व से परिचित कराना चाहते हैं। सम्भव है यह उनको समझ आ जाये और वह आपके अज्ञान के चँगुल से आज़ाद होकर सत्यज्ञान अपनाने की इच्छा प्रगट करें। फिर वह बच्चे उस इच्छा को पूर्ण करने की युक्ति ग्रहण करें ताकि उनके पूर्ण जीवन में मन-वचन-कर्म द्वारा कोई भी ऐसी नकारात्मक क्रिया न हो जिसके दुष्परिणाम के कारण उनको फिर से जन्म-मरण का चक्र-व्यूह भुगतना पड़े। इस तरह उस दिन उनको विस्तृत रूप से अपने आप से परिचित कराया जाएगा और बताया जाएगा कि इच्छा शक्ति क्या है और उसे कहाँ सुनियोजित करना चाहिए ताकि संकल्प विकल्प की तरंगें उनके मन में न उठें। इसी के साथ साथ, ऐसा सुनिश्चित करने के लिये जिस ज्ञान शक्ति की उन्हें आवश्यकता है, उस ज्ञान को धारण करने का आवाहन भी उस दिन दिया जायेगा ताकि जीवन में वह मानव-धर्म अनुसार समर्पित रहते हुए जो भी करें वह सुकर्म कहलाये। इससे सजनों उनको भास हो जायेगा कि वह मानव रूप में इस जगत में आयें हैं और 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर स्थिरता से खड़ा होना उनके जीवन की प्राथमिकता है। इस विचार को प्राथमिकता देने पर ही वह जीवन में हर कदम विचारसंगत आगे बढ़ा पाएंगे और जीवन के वास्तविक अर्थ को समझने में समर्थ हो जाएंगे। अतः सजनों अगर आप जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हो और उनको भी सफलता के मार्ग पर प्रशस्त करना चाहते हो तो अगले इतवार सुबह दस बजे सत्संग के समय सपरिवार आ जाना। इस संदर्भ में कोई भिन्न भेद नहीं यानि आप चाहो तो पड़ोस के बच्चों या किसी अन्य संगी-साथी को भी साथ ला सकते हो और परोपकार कमा सकते हो। यहाँ सजनों जान लो कि जो 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर नहीं खड़ा होता वह कदाचित संकल्प-विकल्प के चक्रव्यूह से मुक्त नहीं हो सकता। परिणामतया वह जगत में और उलझता-उलझता, उलझ जाता है। यह उलझना त्रेता युग से आरम्भ होती है, द्वापर में बढ़ जाती है और इसी में उलझकर कलियुग में सब पूरे के पूरे ही पागल हो जाते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि भ्रमित और भ्रष्ट हो निश्चयहीन हो जाती है। इस बुद्धिहीनता से छुटकारा पाने के लिये सजनों अपने बच्चों के सजन बनना और अगले इतवार उन सबको यहाँ लेकर आना। आगे ध्यान से सुनोः-

महाबीर जी रहे ने पुकार, 'प्रीति' तूं किस नाल करनैं।

मिथ्या ए संसार, 'प्रीति' तूं किस नाल करनैं।।

ए देही तेरी ख़ाक दी ढेरी, निकल गया चमत्कार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

जिस देही दा अभिमान तूं करनैं, ओ वी ना चलसी तेरे नाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

पंज चोर तेरे अन्दर वसदे, मौत दा घर रहे दिखाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।।

जिस धन दा हंकार कितोई, ओ यमां दा घर रहे दिखाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

मिथ्या महल ते मिथ्या माड़ियां, चार दिनां दी बहार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

जिन्हां पिच्छे तूं कूड़ कमत्तो, ओही आसन तैनूं साड़।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

भाई बन्धु तेरे मित्र प्यारे, कोई न चलसी तेरे नाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

हुण वी सम्भल तूं मूर्ख बन्दिया, जन्म अपना संवार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

मिथ्या संसार दी प्रीति नूं छोड़ के, आओ महाबीर जी दे द्वार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

नाम ध्यावो भैणां उस बली दा, यमां तो लैसन छुड़ा।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

महाबीर जी दे चरणां विच 'प्रीति' बढ़ाओ, रघुनाथ जी नूं देसन मिला।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

दासी ऐही अरज़ां करदी, सुध लवो भैणां सच्चे घर दी।

महाबीर जी अगूं करो नमस्कार, महाबीर जी अगूं करो नमस्कार।।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।

इस भजन में सजनों परोपकार प्रवृत्ति सच्चेपातशाह जी, कलुकालवासियों की मानसिक दुर्दशा को दृष्टिगत रखते हुए, उनको बहिर्मुखी होने की यानि ख़्याल-ध्यान को जगत संग जोड़ने की सबसे बड़ी गलती से परिचित कराते हुए कहते हैं कि जिस संग आप प्रीत लगा रहे हो, वह सब मिथ्या है और अन्ततः एक दिन इसका नाश होना निश्चित है। उस समय नाश होने पर विलाप करोगे, रोवोगे और बहुत पछोताओगे। सजनों इस प्रकार की परिस्थिति अगर विवेकशील मानव के साथ हो तो अत्यन्त ही शर्म की बात लगती है। इसीलिये तो वह इस भजन में इंसान को विवेकहीन मूर्ख इन्सान के नाम से सम्बोधित करते है। यहाँ सजनों आत्मनिरीक्षण करो कि आप में से कौन-कौन ऐसे इंसान की गणना में आता है। जानो जिसके भी अन्दर केवल संसारी इच्छाएँ दिन रात चलती हैं व परमार्थ की इच्छा उत्पन्न ही नहीं होती वह विवेकहीन मूर्ख ही कहलाता है। ऐसा इंसान परमार्थ की बात पर ध्यान ही नहीं देता। यहाँ तक कि परमार्थ का जिक्र भी हो रहा हो तो वह स्वार्थ का काम करता रहता है। यहाँ जरा सोचो कि स्वार्थ का काम करते-करते उस तरफ ध्यान देते हुए, परमार्थ की बात को कैसे सुन सकते हो। जानो यह तो यह एक छल यानि दिखावा ही होता है और दिखावे के लिये ही ऐसे सजन सत्संगों में आते हैं। सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि प्रीत उस संग होनी चाहिये जो हमेशा अटल रहे। अटल प्रीत लगाने के लिये हमें अन्तर्मुखी होना पड़ेगा क्योंकि सब कुछ तो हमारे अन्दर है। ईश्वर भी हमारे अन्दर और आत्मा भी हमारे अन्दर है। हमारा वास्तविक स्वरूप भी अन्दर है। यह स्थूल शरीर तो दिखावा है। अब अपने आत्म-स्वरूप का दर्शन करने की हमारी सामर्थ्य ही नहीं बन पा रही क्योंकि हम स्वार्थपरता में उलझे पड़े हैं। चाहे परमार्थ हेतु हम सत्संग में बैठते अवश्य हैं पर बताई गई सार्थक बात पर अमल नहीं कर पाते। कलियुग में हरेक के मन में ऐसा ही घोर अन्धकार छाया हुआ है। अब अन्धों को सत्य कैसे दिख सकता है? उनको तो

कोई जो कुछ भी बतायेगा वह उसी में ही उलझे रहेंगे और उसी अनुसार ही अपना नकारात्मक स्वभाव अपना लेंगे। अपनी सुध न लेते हुए दूसरों की बातों में रुचि लेंगे और वैसा ही करेंगे। इस विषय में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि हे सुरतो/बहनो ! अपने सच्चे घर की सुध लो और परखो कि क्या आपने अपने घर में नश्वरता का सामान इकट्ठा कर रखा है यानि उनकी प्राप्ति की इच्छा आपके अन्दर प्रबल है या फिर अमरता को प्राप्त करने की इच्छा है? निश्चित ही सजनों जो भी इच्छा प्रबल होगी वही आपके जीवन का अन्त परिणाम निकलेगा यानि या तो मोक्ष को प्राप्त करोगे या फिर जन्म-मरण के दुःखद चक्र-व्यूह में फँसे रहोगे। यहाँ जानो मोक्ष आनन्द अवस्था है, विश्राम अवस्था है। अब जब बड़ी मुश्किल से कई योनियों के उपरान्त मानव चोला मिला है तो दुर्बुद्धि बनकर अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मत मारो क्योंकि इसकी पीड़ा तो खुद को ही भुगतनी होगी। अब अपने पर कृपा कर अपनी सुध लो और अपने सजन बन जाओ। अब इस परिप्रेक्ष्य में आपके बच्चों से ऐसी भूल न हो इस हेतु अगले इतवार को उनको जाग्रत किया जायेगा ताकि जिस दग्ध-भस्म की ओर आप उनको धकेल रहे हो, वह उससे बच जायें। मानो अगर वे बातें मान गये तो दग्ध-भस्म से बचकर अमरता को प्राप्त हो जायेंगे। सजनों जो आप अब तक घरों में नहीं कर पाये वह सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की कृपा से उनके द्वारे पर होने लगा है। अगर अभी भी लाभ नहीं उठाते तो सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि ऐसे सजन अपने जन्म के वैरी होते हैं। फिर सच्चेपातशाह जी कहते हैं, 'किस्मत दा ताला खोल रे, किस्मत दी कुन्जी हेई कोल रे'। यह सजनों अपने जन्म का ताला खुद खोलने की बात है। इस हेतु बस चाबी को बहिर्मुखता से अन्तर्मुखी दिशा में घुमाना है। ऐसा करने से ही मस्तक के किवाड़ खुल जाएंगे और आनन्द आ जाएगा। अब ध्यानपूर्वक कीर्तन सुनोः-

(श्री महाबीर जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

श्री रामचन्द्र शक्ति लक्ष्मी सारे बैठे रल के।

चलो चलिये दरबार दे अन्दर बात करनी है चल के।।

कवित्तः-

जेहड़ा आद जिव्हा ते अक्षर लिखया सी, उसनूं क्यों तुसां छोड़ दिया।

उसनूं क्यों तुसां छोड़ दिया, उस वल्लों क्यों मुख मोड़ लिया।।

आद अक्षर नूं छोड़ दिया, सुकर्म धर्म वल्लों मुख मोड़ लिया।

योग साधना दे दो अक्षर, उन्हां वल सजनों तुसां ध्यान न दिया।।

आद अक्षर नूं छोड़ दिया, जन्म अपने नूं क्यों रोल दिया।

आद अक्षर नूं याद करके, भुलियां जन्मां दा जीवन बनाय लिया।।

आद अक्षर बड़ा बलवान है जी, ओही साथी ओही शान अक्षर साडे नाल जासी।

युक्ति लै के रमणे वालड़े नूं, रोम रोम दे विच रमा लिया सी।।

दुनियां वालियो आद अक्षर जैं पहिचान लिया, अमर उसने अपना नाम किया।

सर्व आत्मा विच परमात्मा नूं, उसने ही सजनों जान लिया।।

इस कीर्तन के माध्यम से हर सजन से यह सवाल पूछा गया है कि हे इन्सान ! क्योंकर आपने मूल-मन्त्र जो आद् अक्षर है उसकी तरफ से मुख घुमाकर ख्याल को जगत संग जोड़ लिया है? क्योंकर ख़्याल-ध्यान उस शब्द में स्थित रख, आत्मा में परमात्मा के सत्य को न जानने की मूर्खता की है? जानो सजनों ख़्यान ध्यान को शब्द में स्थित रखना, यह मन को आद् शब्द में लीन रखने की उत्तम बात है परन्तु आपने नश्वरता से ख़्याल को जोड़कर सर्वोत्तम प्राप्ति से अपने आप को स्वयं वंचित रखा है। इसी कारण आप अमीरों के अमीर होने के स्थान पर निर्धनता के भाव में जा गिरे हो। अब जहाँ निर्धनता का भाव होता है, वहाँ इच्छाओं का तांता लग जाता है। ऐसा इंसान जिसके पास जो देखता है उसे प्राप्त करने का लोभ पड़ जाता है। इसी वजह से आप संसारी नाशवान वस्तुओं के मोह में ग्रस्त हो, आप माया के अधीन हो गये हो और बुद्धि का विनाश कर बैठे हो। सजनों आपने अपने साथ यह क्या कर लिया? क्या करने आये थे, क्या कर बैठे और अपना आल्हा जन्म गँवा बैठे, पर अभी समय है। इस संदर्भ में ओ३म् आद् अक्षर की महत्ता और महत्त्व को कई बार समझाया गया है। बोर्डों अनुसार भी यह समझाया जा रहा है पर ख़्याल संसार में इतना ग़ुमराह हो चुका है कि हमारे लिए सही रास्ते पर आना असम्भव सी बात हो गई है। बार-बार प्रेरित करने के उपरान्त भी हम सांसारिकता से उबरकर परमार्थ को अपनाने में खुद को असक्षम पा रहे हैं। सजनों यही कारण है कि इस वर्ष आध्यात्मिक क्रान्ति का शुभारम्भ करना पड़ा। पर हम उस क्रान्ति को भी एक क्रान्तिकारी इन्सान की तरह नहीं ले रहे।

अगर लिया होता तो हमारे घर-परिवारों में जो हम फोनों पर ग्रुप बनाते हो, उस द्वारा परमार्थ की चर्चा आरम्भ हो गई होती और अब तक कितना आत्म-सुधार हो चुका होता। इस तरह हम आत्मोद्धार करने में अपने आप को पूर्णतः सक्षम पाते। यही हम अगले इतवार बताने वाले हैं और आपकी लापरवाही का नतीजा भी सुनाने वाले हैं। अब आप सब सद्मार्ग पर आ जाओ और अपना ख़्याल ध्यान आद् अक्षर में स्थित कर लो व इच्छामुक्त हो जाओ। आशय यह है कि सिर्फ मन में एक ही प्रबल इच्छा हो - मोक्ष प्राप्ति की। सजनों यहाँ आप इच्छा-शक्ति को नियोजित करो। अगर सफल हो गए तो आपको स्वतः ही आत्मज्ञान प्राप्त हो जायेगा क्योंकि हृदय विदित चार वेद और रोम-रोम प्रकाशित छः शास्त्र प्रकाशित हो जायेंगे व आपकी ध्यान-दृष्टि उसे पढ़ने लगेगी और ख़्याल उसे धारण करने लगेगा। इस तरह मन आत्मज्ञान प्राप्तकर आत्मतुष्ट हो जाएगा। यह होती है इच्छा-मुक्त, संकल्प-रहित अवस्था। सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि सत्-वस्तु तो घर में है पर हम पागलों की तरह उसे बाहर ढूँढ रहे हैं। इस शरीर रूपी मशीनरी को विधिवत् चलाने का ज्ञान हमारे घर में है, हृदय विदित है, रोम-रोम में विदित है और हम बाहर शरीरधारियों से ज्ञान प्राप्त करने में तुले हुए हैं। इससे बड़ा पागलपन क्या हो सकता है? सजनों जब हम अन्दर से ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ हैं तो शरीरधारियों के पीछे ज्ञान प्राप्ति हेतु क्यों भागते हैं? शरीरों के गुरु-चेलों के बन्धन में क्यों फँसते हैं? याद रखो उनके जो गुर होते हैं उनमें मनमत लगी होती है पर जो वेद-विदित हैं, वह कुदरत प्रदत्त हैं यानि जिस कुदरत ने हमारी बनत बनाई, उसकी दात है।

सजनों इस बात को हम विस्तारपूर्वक अगले रविवार को बताने वाले हैं। साथ ही यह समझाने वाले हैं कि ऐसा सुनिश्चित करने से आपको कितना लाभ होने वाला है और आप कैसे सत्यनिष्ठा से धर्मपरायण बनने वाले हो। सजनों अगर इतना बताने समझाने के बावजूद भी आप हार खा गये तो इसका कोई ईलाज नहीं होगा। अब यह सब कुछ आप पर निर्भर करता है। फिर भी युक्ति को अपनाकर आप विजयी हो यही हमारी शुभकामना है।

जय सीताराम जी।